ये पेड़ उगाने वाले शिक्षक !

– अनुराग बेहार

सीईओ, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन तथा वॉइस चांसलर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

ये तीन बड़े से पेड़ हर चीज पर छाए हुए थे। उनकी ऊंचाई के बराबर इस पथरीले सपाट मैदान में और कोई भी चीज नहीं थी। जैसे ही हम स्कूल के पास पहुंचते जा रहे थे, वे पेड़ कई किलोमीटर दूर से ही दिखाई देना शुरू हो गए थे। वे लगभग साठ फीट ऊंचे थे और स्कूल के मैदान के किनारे पर एक कतार में खड़े हुए थे। हम स्कूल की इमारत के पहले तल पर पेड़ों की छाया में बैठ गए। नीचे के तल पर दो कमरे थे, जिनमें एक से लेकर आठवीं तक कक्षाएं चल रही थीं। उन सभी आठ कक्षाओं के 53 बच्चों के इकलौते शिक्षक हमारे साथ कमरे के एक कोने में चुपचाप बैठे हुए थे। उन्होंने बच्चों को कुछ कार्य दिया हुआ था, ताकि वे हमारे साथ इस संक्षिप्त बातचीत में हिस्सा ले सकें।

वह छोटा सा कमरा स्कूल के पूर्व छात्रों से भरा हुआ था, जिनकी संख्या 17 थी। जिनमें से लगभग तीन, दस घंटे की रात भर की बस यात्रा करके स्कूल पहुंचे थे। बाकी के सभी एक या दो घंटे की यात्रा सार्वजनिक बसों या अपने दोपहिया वाहन से करके पहुंचे थे। उनमें से बस दो ही अब इस गांव में रहते थे। जैसे–जैसे परिचय का दौर बढ़ा वैसे–वैसे मेरी उलझन भी बढ़ती गई। ये सभी नौजवान यहां क्यों आए? वो भी घंटों की यात्रा करके। जैसे मैं हर महीने कई स्कूल विजिट करता हूं वैसे ही मेरे लिए तो यह एक साधारण स्कूल यात्रा ही थी। मेरी अपेक्षा में तो शिक्षक, बच्चों और बहुत हुआ तो समुदाय के कुछ लोगों से बात करना शामिल था। यह किसी तरह का कोई समारोह तो था नहीं।

इस बात का उत्तर बेहद आसान था। शिक्षा में रूचि रखने वाला, उनके इलाके से बाहर का कोई व्यक्ति, बरसों बाद उनके स्कूल में पहुंचा था। वे चाहते थे कि उनके स्कूल की कहानी भलीभांति सुनाई जाए। वे इस बात के लिए इस शिक्षक, जो उनके भी शिक्षक रह चुके थे, पर यकीन नहीं करते थे। इसलिए वे सब खुद यहां आए ताकि अपने स्कूल के बारे में बता सकें।

बहुत पुरानी बात है जब वे सब बच्चे थे, तब स्कूल में कोई और शिक्षक पढ़ाया करते थे। वे बच्चों का ध्यान रखने वाले और दयालु थे। जब वे थे उन दिनों स्कूल की जिन्दगी उत्साह और खुशी से भरी हुई थी। वे उन्हें अच्छे से पढ़ाते थे और बच्चों का ध्यान भी रखते थे। वे न सिर्फ उनकी शिक्षा का बल्कि उनके स्वास्थ्य और उनके परिवार के बारे में भी चिन्तित रहते थे। एक दिन शिक्षक और

उनके बच्चों ने तीन पौधे रोपने का फैसला किया। उन्होंने बादाम का पेड़ चुना। यह तो याद नहीं कि क्यों, शायद इसलिए क्योंकि इतने पथरीले, गर्म और सूखे वातावरण में कोई बादाम के पेड़ों की कल्पना नहीं कर सकता। स्कूल में जिंदगी मजे और व्यस्तता में निकलती रही। वे पेड़ों की देखभाल करते रहे जो हरे बैंगनी और फिर सलेटी हो गए जैसा कि बादाम के पेड़ों के साथ होता है। लेकिन अगले ही वर्ष उन्होंने एक तूफान का सामना किया। उनके शिक्षक का तबादला दूसरे सरकारी स्कूल में कर दिया गया और उनकी जगह लेने के लिए दो नए शिक्षक इस स्कूल में लाए गए। एक शिक्षक को किसी बात से कोई मतलब नहीं था दूसरे क्रूर स्वभाव के थे। इन दोनों ने इसके बाद की उनकी सभी स्मृतियों को मिटा दिया था। सिर्फ एक साल में ही तीस में दो के अलावा सभी बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया, कुछ ने पास के गांव के सरकारी स्कूल में दाखिला ले लिया और कुछ स्कूल से ड्राप आउट हो गए।

बहुत पुरानी बात है जब वे सब बच्चे थे, तब स्कूल में कोई और शिक्षक पढ़ाया करते थे। वे बच्चों का ध्यान रखने वाले और दयालु थे। उन दिनों स्कूल की जिन्दगी उत्साह और खुशी से भरी हुई थी। वे उन्हें अच्छे से पढ़ाते थे और बच्चों का ध्यान भी रखते थे। वे न सिर्फ उनकी शिक्षा का बल्कि उनके स्वास्थ्य और उनके परिवार के बारे में भी चिन्तित रहते थे। एक दिन शिक्षक और उनके बच्चों ने तीन पौधे रोपने का फैसला किया। उन्होंने बादाम का पेड़ चुना। यह तो याद नहीं कि क्यों, शायद इसलिए क्योंकि इतने पथरीले गर्म और सूखे वातावरण में कोई बादाम के पेड़ों की कल्पना नहीं कर सकता। स्कूल में जिंदगी मजे और व्यस्तता में निकलती रही।

उन्होंने स्कूल तो छोड़ दिया था, लेकिन पेड़ों को नहीं छोड़ा था। वे उनकी देखभाल करते रहे उन्हें पानी देते रहे, छंटाई करते रहे और उन्हें बचाते रहे और पेड़ बढ़ते रहे।

साल निकला और गर्मियों में उन दोनों शिक्षकों का तबादला कर दिया गया। उनकी जगह ये शांत शिक्षक आए जो अभी हमारे साथ कमरे के कोने में बैठे हुए थे। उन्होंने अपने दो बच्चों और तीन पेड़ों की सुध ली। ये दो बच्चे हर दिन उनके बारे में गांव में चर्चा करते थे। वे बच्चे जो पेड़ों की देखभाल करते थे उन्होंने देखा कि उनके पेड़ों की देखभाल की जा रही है। तब शिक्षक ने उन बच्चों से जाकर बात की जो सारा दिन खेतों में घूमते थे, बकरियां चराते थे या यूं ही घुमक्कड़ी किया करते थे। उनसे भी जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया था। शिक्षक ने उन्हें स्कूल आने के लिए मनाया।

एक के बाद एक वे सभी वापस आ गए। उनके पीछे वे भी वापिस आए जिन्होंने दूसरे स्कूलों में नाम लिखवा लिया था। इस शांत आदमी के बारे में यह सुनकर, जो किसी बच्चे जितना ही दयालु था और किसी भी बच्चे को सब कुछ सिखा सकता था, एक साल के भीतर पास के गांवों से बच्चे वापिस आए। जब सबसे बड़े बच्चों का समूह कक्षा पांचवी में पहुंचा तब सरकार ने स्कूल को आठवीं कक्षा

तक बढ़ा दिया ताकि बच्चे उसी स्कूल में उसी शिक्षक के साथ रहें। किसी भी अतिरिक्त शिक्षक की पदस्थापना नहीं की गई।

यह शिक्षक हफ्ते के सातों दिन स्कूल को जारी रखते थे और आठों कक्षाओं को पढ़ाते थे। समय के साथ सबसे बड़े बच्चे आठवीं कक्षा से उत्तीर्ण होकर पास के हाई स्कूल में दाखिला ले चुके थे। हालांकि उन्होंने सचमुच स्कूल नहीं छोड़ा था। वे सभी रविवार को शाम को और छुट्टियों के दिनों में वापिस आते थे ताकि उनके शिक्षक उन्हें पढ़ा सकें। एक दशक से ज्यादा समय बीत गया, इस शांत आदमी ने अपना काम हर दिन जारी रखा जैसा कि इतने वर्षों से होता आया था। स्कूल में जिन्दगी लगभग वैसी ही चल रही थी।

लेकिन उनके वह छात्र जो यहां इकठ्ठा हुए थे, उनके लिए जिन्दगी वैसी नहीं थी, और न ही उनके लिए जो यहां नहीं थे। अब जो उनका जीवन है वे उसकी कल्पना इस छोटे गरीब से त्रस्त गांव में कर भी नहीं सकते थे। उनमें दो, जो यहां दस घंटों की यात्रा करके पहुंचे थे, एक वैश्विक आई.टी. कंपनी में काम करते थे। तीसरा डॉक्टर था, बाकी सत्रह में से पुलिस इंस्पेक्टर, सफल व्यापारी, शिक्षक, लोक सेवक यहां तक कि एक उभरता हुआ नेता भी थे।

हम यहां आपको यह कहानी सुनाने के लिए ही आए हैं। यह वह भगवान हैं जिनमें हम भरोसा करते हैं। और हम ही यह आपको बता सकते हैं इसलिए हम यहां हैं। वे (शिक्षक) अपनी कुर्सी पर बैठे हुए बैचैनी से छटपटा रहे थे और मौका मिलते ही उन्होंने बातचीत के बीच में कक्षा में जाने का बहाना किया।

जब हम वापिस जाने लगे तो वे (शिक्षक) हमें छोड़ने कार तक आए और अपनी कोमल और उज्जवल मुस्कान फैलाई जैसे वे अपने बच्चों के साथ हों, और कहा– उनका विश्वास मत कीजिए सर, वे सब कुछ बढ़ा–चढ़ा कर बताते हैं। वे बस बहुत अच्छे बच्चे हैं। जैसे–जैसे हमारी कार ने गति पकड़ी पीछे देखने पर सब कुछ धुंधला पड़ने लगा लेकिन वे तीनों पेड़ नहीं धुंधलाए। कुछ भी एक महान ऊंचाई तक पहुंच सकता है अगर आप बस भरपूर देखभाल करें तो।

साभार– सुबह–सवेरे, 27 मार्च 2020